

1947 में भारत - पाक विभाजन का खरखौदा क्षेत्र पर प्रभाव

डॉ. किरन सरोहा, प्राध्यापिका इतिहास विभाग, शहीद दलबीर सिंह राजकीय महाविद्यालय खरखौदा, सोनीपत

Email: kiransarohadalal@gmail.com

प्रस्तावना

1947 में ब्रिटिश भारत का बंटवारा एक महत्वपूर्ण घटना थी जिसका बहुत व्यापक प्रभाव खरखौदा के आसपास सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और जनता जनसंख्या पर हुआ। इस शोध पत्र में इस पर पड़े प्रभाव की समीक्षा की गई है।

विभाजन से पहले खरखौदा मुस्लिम मुख्यतः सैयद परिवारों का शहर था जिन्हें अमीर भी कहा जाता था। खरखौदा का लिखित वर्णन लगभग 900 साल पहले मिलता है। फिरोजशाह तुगलक के समय (1351- 1388) खरखौदा का जिक्र आता है। मुगलों के समय में खरखौदा दिल्ली सरकार का एक परगना रहा है यहां पर शाही दरबार से विभिन्न आमिल नियुक्त होते रहते थे जो मुख्यतः मुस्लिम ही होते थे इसलिए यहां विशेष कर साथ वाले बड़े गांव हसनगढ़ में मुस्लिम जनसंख्या ज्यादा रहती थी। 1705 में सैयद हसमत अली को खरखौदा का जागीरदार बनाया उसको नवाब का खिताब दिया। सन 1710 में खरखौदा के आमिर को बंदा बहादुर ने भगा दिया तथा साथ वाले गांव सेहरी – खाण्डा में कुछ समय के लिए अपना मुख्यालय बना लिया था।

1792 में जींद के राजा गजपत सिंह के पुत्र भाग सिंह ने खरखौदा परगना को शाह आलम से ले लिया। 1819 में भाग सिंह की मृत्यु के बाद अंग्रेजों ने खरखौदा को सीधा अपने अधिकार में लिया खरखौदा को एक नई जागीर बनाया गया इसमें चार गांव थे हसनगढ़, कीडोली, पहलादपुर और खुरमपुर। यहां का एक नया जागीरदार बना इसका नाम था ताज मोहम्मद खान। 1857 की क्रांति के समय भी रिसालदार बिसारत अली एवं आसपास के गांव के योद्धाओं ने एक अहम भूमिका निभाई। 1924 में खरखौदा को रोहतक जिले में शामिल किया गया। क्रांति में इसका विशेष योगदान रहा। 1972 में खरखौदा को सोनीपत जिले में मिलाया गया। 2009 में एक हल्का बनाया गया। 2011 में सब डिवीजन बनाया गया। खरखौदा में औरंगजेब द्वारा बनाई गई एक मस्जिद भी थी जो अब खंडहर हो चुकी है। यहां पर सैयद सूफी का मकबरा है जहां पर प्रतिवर्ष मेला लगता है। 2001 की जनगणना के अनुसार खरखौदा की जनसंख्या 18,758 थी एक तहसील के रूप में इसके 45 गांव हैं यहां पुरुषों की जनसंख्या 53% और महिलाओं की जनसंख्या 47% है।

3 जून 1947 में माउंटबेटन योजना के आधार पर भारत का विभाजन हुआ जिसके लिए 15 अगस्त 1947 का दिन निश्चित किया गया क्योंकि ब्रिटिश वायसराय लुईस माउंटबेटन ने दो नए राष्ट्रों के निर्माण की रस्मों में हिस्सा लेना था इसलिए 14 अगस्त को उन्होंने कराची में और 15 अगस्त को नई दिल्ली में सत्ता परिवर्तन की रश्में में अदा की परंतु भारत देश के इस विभाजन का करोड़ों लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ा भारत में विभाजन के दौरान हुई हिंसा में दो से 5 लाख के करीब लोग मारे

गए खरखौदा भी इस हिंसा से अछूता नहीं रहा यहां भी हजारों की संख्या में लोग मारे गए 1.45 करोड़ की जनसंख्या शरणार्थी हो गई 72 लाख 26 हजार मुसलमान भारत छोड़कर पाकिस्तान गए और 72 लाख 49 हजार हिंदू और सिख पाकिस्तान छोड़कर भारत में आए पाकिस्तान से आए ज्यादातर शरणार्थी पश्चिम में और विशेष तौर पर पंजाब में बसे खरखौदा उस समय पंजाब का हिस्सा था तो यहां भी पाकिस्तान से आए लोगों को जमीन मिली और लोग यहां पर बसे वर्ष 1941 में जब ब्रिटिश सरकार ने अपने शासनकाल के दौरान अंतिम बार जनगणना कराई उस समय पंजाब की जनसंख्या 34.3 मिलियन थी तत्कालीन पंजाब में 29 जिले 45 रियासत 52047 गांव एवं 283 कस्बे शामिल थे अध्ययन के लिए खरखौदा तहसील को चुनाव जिसके अंतर्गत खरखौदा कस्बा एवं 44 गांव आनंदपुर, अशरफपुर-मटीडू, बरौना, बीधलान, छिनोली, फरमाना फिरोजपुर-बांगर, गढ़ी-सिसाना, गोपालपुर जटोला गोरड झरोठ झरोठी, झींजौली, कंवाली, किडोली, कतलूपुर, खांडा, खेड़ी-दहिया, खुरमपुर, कुंडल; मंडोरा, मंडोरी, मौजम नगर, नकलोई, नसीरपुर चोलका, निरथान, निजामपुर खुर्द, निजामपुर माजरा, पहलादपुर, पीपली, रामपुर, रिढाऊ, रोहण, सोहटी, सैदपुर, सेहरी, सिलाना, थाना कला, थाना खुर्द, तुर्कपुर, सिसाना गांव आते हैं।

बंटवारे के प्रभाव

जनहानि

1947 में बरोणा गांव में 7 सितम्बर 1947 को जन्माष्टमी के दिन बहुत से मुसलमान मारे गए जब वह जट खोड गांव जो दिल्ली में पड़ता है वहां कैप में पहुंचाना चाह रहे थे कैप में पहुंचने के लिए खरखौदा से मुस्लिम लोगों ने गोपालपुर के रास्ते से गुजरना चाहा तो गोपालपुर वासियों ने उन्हें रास्ता नहीं दिया चूँकि बरौना गांव से खरखौदा के मुसलमानों का अच्छा रसूक था और उनकी अच्छी मित्रता थी आते हुए बरोणा गांव में पाई ट्रेन के पास पहुंचे जहां आसपास के गांव से बहुत से हिंदू इकट्ठे हो गए थे दोनों के पास असले भी थोड़ीसी दिन बहुत बारिश हो रही थी मुसलमान पर हिंदुओं दोनों के पास बंदूके तलवारे और फरसे थे परंतु मुसलमान ने कोई आक्रमण नहीं किया क्योंकि उनके युवा भाग निकले थे इस स्थान पर जघन्य हत्याकांड हुआ।

इस रक्तपात के प्रत्यक्ष दर्शी मास्टर सुमेर ग्राम छिनौली का कथन है कि बहुत से लोग मारे गए एक कुएं में मुस्लिम महिलाएं गिर गई यदि उसे कुएं की खुदाई की जाए तो आज भी बहुत से कंकाल मिल सकते हैं। साक्षात्कार इस घटना के पुष्टि सैयद कासिम जो कि पाकिस्तान से 2007 में खरखौदा मिलने आए थे ने भी की है। सैयद कासिम अली शाह का जन्म ब्रिटिश भारत के सोनीपत जिले के खरखौदा कस्बे में हुआ उनके पिता सैयद हाशिम अली शाह एक जमींदार थे 1948 में उन्होंने साहित्यिक मासिक पत्रिका आलमगीर में इसके मालिक और संपादक हाफिज मोहम्मद आलम के प्रबंधक के रूप में काम करना शुरू किया 1969 में उन्होंने साप्ताहिक ख्याम और 1951 में से 1960 तक पब्लिशर यूनाइटेड नामक प्रकाशन कंपनी में काम किया जनवरी 1950 में उन्हें पंजाब विश्वविद्यालय में लिपिक की नौकरी मिल गई जहां से वह उर्दू को पाकिस्तान की राष्ट्रीय भाषा के रूप में बढ़ाना दे बढ़ावा देने में सक्रिय हो गए।

सैयद कासिम जो पाकिस्तान से 2008 में खरखौदा मिलने आए थे, उन्होंने बताया कि 1947 में खरखौदा की जनसंख्या लगभग 3000 थी जिसमें लगभग 2300 मुस्लिम और 700 हिंदू थे। इस मारकाट में मुसलमानों में केवल पांच आदमी जिंदा बचे थे जिन में एक खुद कासिम महमूद दूसरा शिफायत अली खान। खरखौदा सरकारी स्कूल के हेड मास्टर अल्फाक हुसैन पाकिस्तान चले गए वहां इनका लड़का अलकाक हुसैन जो पाकिस्तान में जाकर सेना में एक बड़ा अधिकारी बना उनकी मृत्यु टीवी से हुई पाकिस्तान से इसी प्रकार खरखौदा से लगते गांव मंडोरा, गांव थाना हसनगढ़ में भी बहुत से मुस्लिम मारे गए।

हरियाणा के रियासत इतिहास पुस्तक के लेखक यशपाल गुलिया 1947 के खरखौदा में हुए हत्याकांड के विषय में लिखा है कि सन 1947 में विभाजन के समय भी हसनगढ़ वह खरखौदा में अत्यधिक रक्तपात हुआ। हसनगढ़ में हथियारबंद मुसलमानों की संख्या ज्यादा होने पर आसपास के ग्रामीणों ने इकट्ठे होकर 6 दिनों तक गांव को घेर रखा लेकिन असफल रहने पर किसी मध्यस्थ का सहारा लेकर सभी मुस्लिम को सुरक्षित दिल्ली पहुंचने का झूठा आश्वासन देकर बाहर निकाल लिया इस प्रकार एकत्रित हुए असहाय मुसलमानों का नहर के पास पहुंचने पर धोखे से कत्ल कर दिया गया। उपरोक्त घटना के विषय में मुझे जसौर खेड़ी गांव के एक वृद्ध ने बताया था जो पूरी घटना का चश्मदीद गवाह था।

श्री दलपत सिंह पुत्र श्री गोपीचंद जिनके दादा श्री महला राम मुंशी पिता गोपीचंद एवं चाचा रामकिशन 1947 में हकीम मेहरबान के पास नौकरी करते थे उनके ताऊजी सूरत सिंह मेहरबान की लड़की के पास दिल्ली में नौकरी किया करते थे उन्होंने साक्षात्कार के दौरान बताया की मेहरबान के पास तीन गांव की जमीन थी जो नया गांव बहादुरगढ़ सोरखी एवं मुंडाल हिसार में हंसी कस्बे से पहले पड़ती थी! यह यहां के जमींदार थे मेहरबान रिटायर्ड कलेक्टर थे मेहरबान एवं अयूब दो भाई थे मेहरबान के एक पुत्र शरीफ एवं चार पोत्र सरदार, मुख्तियार, सालार एवं विपिन थे यह खरखौदा के बहुत बड़े रईस थे इनका एक ही पुत्र सथा जिसकी पत्नी झज्जर के जज की पुत्री थी इनके पास जर्मनी से मंगाई गई मोटर कार थी इनके बेहतर दरवाजा वाली हवेली थी जिसके अवशेष खरखौदा में आज भी मौजूद हैं एक बड़ा बाग था और आधुनिक हाई स्कूल के सामने पक्का बाग में 8- 10 एकड़ में एक विशाल बैठक थी जिसके अंदर से एक धाना (पानी का नाला) गुजरता था इनके पास कई घोड़ियों और एक विशाल खजाना था जिसमें काम करने के लिए कर्मचारियों को आंखों पर पट्टी बांधकर ले जाया जाता था जहां पर फावड़े से अशरफिया समेटा करते थे इनका कथन है कि यह खजाना राम चौक के तहखाना में आज भी खरखौदा में जमीन के नीचे दफन है जिसके बारे में किसी को ज्ञान नहीं है! 1946 में मेहरबान के पोते की शादी थी जिसमें दिल्ली से पक्के बाग में तवायफें मंगवाई गईं। इनकी एक बेटी अच्छी कुआं काजीहौज रहती थी। दूसरी लड़की करनाल में थी। 1947 में जब हालत खराब होने लगे तब खरखौदा के कुछ घर दिल्ली में चले गए थे तब मेहरबान ने भी खरखौदा छोड़ने की सलाह परिवार को दी परंतु उनकी पुत्रवधू ने ऐसा मानने से इनकार कर दिया उनको यह अंदेशा नहीं था कि इतने शक्तिशाली परिवार को कोई नुकसान पहुंचा सकता है। यह बताते हैं कि मेहरबान ने स्वयं उनकी दादी प्रभाती को अपनी हवेली में आने से मना कर दिया था और यह कहा था कि महला राम की बहू चली जाओ अब चोटी बे- चोटी का सवाल हो गया है। मेहरबान ने सुरक्षा के लिए छत पर ईंटें चढ़ा ली थी आसपास के गांव के जाट इनके रैयत थे इनका कथन है कि रैयतों ने इनकी जमींदारी के कारण इनको मारा या फिर उनके धन के और खजाने के लालच में। उनके अनुसार बरौना रोड

पर नहर के पास इनको मारा गया इसे आज भी खूनी गढा कहा जाता है इस मार काट के ताऊ सूरत सिंह गवाह थे जो उन्हें यह किस्से बताते थे इस हत्याकांड में मेहरबान का एक पोता बच गया जो कि वकालत की पढ़ाई अलीगढ़ से कर रहा था और उसे वक्त वह अलीगढ़ में अपने लिए कमरा देखने गया था वह पाकिस्तान सुरक्षित पहुंच गया था शांति बहाल होने पर वह पाकिस्तान से अपने कागजात अपने लेने के लिए खरखौदा आया था मेहरबान की जमीन पाकिस्तान से आए लोग पंजाबियों को अलॉट हुई इनमें रिजर्व बैंक के गवर्नर पुरी एवं टीडीआई वालों के पूर्वज तनेजा भी थे* (साक्षात्कार पर आधारित)

पीपलीग्राम के रघुबीर सपुत्र रामगोपाल ने बताया की स्कूल में एक झगड़े के कारण सिसाना गांव के दहिया गोत्र के एक लड़के को मेहरबान के ने गाड़ी से बांधकर मार दिया था पंचायत भी हुई मगर उसमें उनको न्याय नहीं मिला छिनौली के एक बुजुर्ग ने बताया कि यह मुकदमा सापला में दर्ज भी हुआ था मेहरबान को खुद 6 महीने की सजा देने का अधिकार था इसलिए आसपास के ग्रामीण उसे वक्त तो चुप्पी साथ गए मगर जैसे ही 1947 में उन्हें मौका मिला उन्होंने मेहरबान के परिवार को नष्ट कर दिया पिपली के बुजुर्ग सरदार जी बताते हैं कि नाहरी वाले ने कहा कि जब तक मैं नहीं आऊं इनको मारना नहीं है तब पंचायत में कहीं बात उन्हें याद दिलाई और उन्हें करने का आदेश दे दिया हालांकि मेहरबान और अन्य मुसलमानों ने हिंदुओं को सोना चांदी और धन देने का लालच भी दिया दहिया गोत्र के लड़के को मारे जाने की पुष्टि आसपास के कई गांव के बुजुर्ग भी करते हैं* (साक्षात्कार पर आधारित)

इसके अलावा बरौना गांव के बुजुर्गों का कथन है कि जब यह मुसलमान बरौना की तरफ आ रहे थे तब यह अफवाह फैल गई कि मुसलमान मुसलमान उन पर आक्रमण करने आ रहे हैं तो लोग उन्हें मार देने पर आमदा हो गए, दूसरे कुछ बुजुर्ग बताते हैं कि 1947 से पहले बरौना गांव में चालीसा गांव की एक पंचायत हुई जिसमें मेहरबान भी शामिल हुआ और मेहरबान को गौ हत्या बंद करने का प्रस्ताव दिया गया जिसे उसने अस्वीकार कर लिया इस बात को याद दिलाया गया कि उस पंचायत में इस मेहरबान ने दहिया पंचायत की बेज्जती की थी आज उस बेज्जती का बदला लेने का अवसर है तब हजारों मुसलमान पाई नहर पर मार दिए गए।*

किस्मत के मारो के किस्से

शिफायत अली खान की एक कहानी है जो अकल्पनीय है ये खरखौदा के सरकारी स्कूल में अध्यापक थे इसलिए थाने के एक विद्यार्थी ने उनकी जान बचा ली थी बाद में यह पाकिस्तान चले गए थे और वहां पर इनको अध्यापक के रूप में बहाल कर दिया गया था यह सियालकोट पिंडी भागों में बसे। दोबारा से शादी की। पहले उनकी पत्नी चार बेटे और एक बेटी खरखौदा की मार काट में कत्ल कर दिए गए थे इन्होंने पिंडी भागों में जाकर एक विधवा से पुनर्विवाह किया उन्हें इनको चार बेटे एक बेटी हुई किस्मत का खेल तो देखिए 1965 में भारत-पाकिस्तान के युद्ध में उसके गांव पर हमले के दौरान उनके पत्नी चार बेटे और एक बेटी पुनः मारे गए यह शिफायत अली कशिम मल्लू के मामा थे *साक्षात्कार मास्टर जोरावर सिंह रिटायर्ड अध्यापक विषय इतिहास 2007 में उन्होंने स्वयं कासिम महमूद से मुलाकात की थी।

शिक्षा पर प्रभाव

स्कूल के एडमिशन विड्रोल देखते हैं तो 10 अक्टूबर 1947 में बच्चों का रिकॉर्ड में मुस्लिम बच्चों के नाम काटे मिलते हैं क्योंकि 7 सितंबर को यहां मार काट में बहुत से मुस्लिम मारे गए और उसके बाद स्कूल बंद रहे तब जब स्कूल दोबारा बाहर हुए तो अक्टूबर महीने में बहुत से मुस्लिम बच्चों के नाम कट गए जनवरी 1948 में नए एडमिशन में पंजाबियों के नाम मिलते हैं हालांकि जनवरी में एडमिशन नहीं होते मगर यह है इस बात की पुष्टि करते हैं कि जो पंजाबी पाकिस्तान से यहां पर आए उनके बच्चों के दाखिले बाद में हुए* यह रिकॉर्ड खरखौदा के सरकारी स्कूल में उपलब्ध है।

आर्थिक नुकसान

मुसलमान को यहां पर अपने घर, संपत्ति पशु धन छोड़कर जान बचाकर भागना पड़ा इसी प्रकार पाकिस्तान में से हिंदू अपनी संपत्ति और ज्यादा छोड़कर आए रातों-रात इंसान राजा से रंक हो गए खरखौदा में आए पंजाबियों में ज्यादातर को जमीन दादरी के आसपास के गांव में मिली जो उसे समय वह सस्ते दाम में बेचकर आ गए क्योंकि वहां पर पानी का प्रबंध नहीं था और जमीन भी ज्यादा उपजाऊ नहीं थी इसी प्रकार मुसलमान की कुछ गड़े हुए चांदी के सिक्के सोने की ईंट और आभूषण प्राप्त होने के किस्से यहां के जनमानस में सुने जा सकते हैं।

धार्मिक प्रभाव

मुस्लिम आबादी के पलायन के कारण यहां पर बनी मस्जिद खंडहर में तब्दील हो गई हो गई और पंजाबियों के आगमन से उनके धार्मिक स्थल रूप में गुरुद्वारे का निर्माण हुआ एक मस्जिद अभी भी बड़े बाजार में है। यहां जाली वाले पीर को आज भी जनता श्रद्धा से पूजती है।

खरखौदा की महान विभूतियाँ

खरखौदा में मुल्तान के आए पंजाबी के आर पूरी खरखौदा के थे। वे 1975 से 1977 तक रिजर्व बैंक के गवर्नर थे। तत्कालीन भारतीय नोटों पर उनके हस्ताक्षर मिलते हैं। सैयद कासिम जो 1947 में पाकिस्तान चले गए थे वे वहां पाकिस्तान में एक बड़े लेखक और संपादक बने।

सामाजिक सोहार्दय का हास

सैयद कासिम खरखौदा वासी जो 1947 में मारकाट से बचकर पाकिस्तान चले गए थे वापस अपने खरखौदा को 2008 में अपनी जन्मभूमि देखने के लिए आना चाहते थे जो उन्हें 80 वर्ष की उम्र में बार-बार सपनों में दिखाई देती थी उन्होंने फरवरी 2008 में दिल्ली में लग रहे पुस्तक मेले के लिए वीजा अप्लाई किया मगर वह रद्द हो गया उनके खरखौदा जाने के नाम से उनके घर में मातम सा छा गया था और वीजा रद्द होने से उन्होंने बताया कि ईद जैसा दिन हो गया मगर उन्होंने स्वयं बताया कि वह रोहतकी थे और उन्होंने हार नहीं मानी और उन्होंने खरखौदा स्कूल को एक पत्र लिखा जिसके आधार पर उनका

वीजा लगा और 7 अप्रैल का दिन खरखौदा आने का तय हुआ इस पर उनकी पत्नी ने सारी चूड़ियां फोड़ दी यह किस्सा स्वयं उर्दू में प्रकाशित करवाया आप मास्टरजोरावर सिंह ने उसका अनुवाद करके लिखा है उनके खरखौदा पहुंचने पर उनके जार जार रोना और खरखौदा के लिए वृद्धावस्था में भी उनका इस लग्न से आना साबित करता है कि बहुत मार्मिक किस वर्षों तक दिलों में दबे रहे उन्होंने वरोना हत्याकांड में अपनी मंगेतर सुनहरी को आंखों के सामने कुएं में कूदते देखा उनका मन स्वयं खरखौदा में कैसा व्यवहार हो यह सोच कर खौफ में था।

इंसानियत की मिसाल

वहीं जहां दिल दहलाने वाले किस्से है कुछ अच्छे किस्से भी हैं जिनमें कुछ गांव ने मुस्लिम परिवारों को छुपा कर जिंदा रखा। थाना के एक परिवार ने अपने मास्टर को छुपा कर जिंदा रखा जो पाकिस्तान चले गए यह परिवार और ग्राम वासी आज भी अपने इस व्यवहार पर गर्व करते हैं।

इस प्रकार 1947 की घटनाओं के बाद खरखौदा क्षेत्र में सांस्कृतिक, धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक परिवर्तन हुए जिनकी छाप जनमानस पर आज तक है।

ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत में अपनाई गई लगान नीति इस प्रकार थी कि उसमें किसानों का शोषण होता था! खरखौदा में हुई हिंसा के पीछे एक अन्य कारण भी था यहां खरखौदा क्षेत्र के मुसलमान जमींदार थे जबकि आसपास के खेतीहर कौम उनकी रैयत थी! इनके मध्य एक शोषण करने वाले और शोषण सहने वाले का रिश्ता था! 1947 में जैसे ही शोषण सहने वालों को मौका मिला उन्होंने अपना प्रतिशोध लिया! इन जमींदारों को अनेक प्रकार के विषय अधिकार प्राप्त है जैसे यह कुर्सी मशीन थे अंग्रेजों के सामने इन्हें कुर्सी पर बैठने का अधिकार था परंतु अन्य व्यक्तियों को नहीं मेहरबान को 6 महीने की सजा सुनाने का अख्तियार था जिसका उसने अनुचित लाभ उठाया उसके पोते ने सिसाना के एक दहिया लड़के को स्कूल में झगड़े के कारण मौत के घाट उतार दिया बहुत प्रयासों के बावजूद दहिया खाप उसका कुछ न बिगाड़ सकी! कोई सजा उनको नहीं मिली! और जब मेहरबान का परिवार हिंदुओं के बीच गिर गया तो उसने गया खाप को धन दौलत देने का वादा किया परंतु ख्वाब किसी लालच में नहीं आई! उनके लिए अपना इंसान पाने का अवसर था, जो जान के बदले जान लेना था! पिपली के ग्रामवासी बुजुर्ग का कथन है कि मरने से पहले उनका वही बातें याद दिलाई जो उन्होंने पंचायत को कही थी!

नफरती चिंगारी का ज्वाला रूप

अध्ययन में यह पाया गया कि कुछ समय पूर्व से ही खरखौदा के आसपास हिंदू व मुसलमान में कुछ टकराव था खरखौदा क्षेत्र में 1900 के बाद आर्य समाज का प्रभाव था! मटिडू ग्राम वासी चौधरी पीरू सिंह ने 1904 में मटिडू गांव में आर्य समाज की स्थापना की! 1913 ईस्वी में गुरुकुल की स्थापना हुई! ग्राम वासियों के साक्षात्कार एवं गुरुकुल की पत्रिका 1995 अंक पृष्ठ 49,58 से यह साबित होता है कि आर्य समाजियों के द्वारा गो हत्या बंद करने के लिए एक मुहिम चलाई जा रही थी, जगह-जगह पंचायतें की जा रही थी! सन 1933 में खांडा गांव में चौधरी पीरू सिंह ने एक पंचायत बुलाई जिसमें यमुना पार

से आए मुसलमानों के पास यहां के पशुओं को बेचने पर पाबंदी लगाई और गो हत्या पर प्रतिबंध लगाने के लिए लोगों के सहयोग का आह्वान किया! बरौना गांव में ऐसी एक पंचायत से मेहरबान का उठ के चले जाना एवं गौ हत्या बंद न करने पर दहिया गोत्र के हिंदू उनसे नाराज थे! यह भी एक कारण बना बरौना गांव में मुसलमान को मारे जाने का!

खरखौदा किसका इस पर भी एक विवाद था! गुरुकुल माटिडू सोनीपत की पत्रिका स्मारिका अंक जून के पृष्ठ 58 पर वर्णन है कि -

"खरखौदा में हिंदू और मुसलमान दोनों आबादी रहती थी परंतु मुसलमान संख्या में अधिक थे वह खरखौदा पर अपना अधिकार समझते थे! अपने पक्ष की पुष्टि के लिए भी कहते थे कि यहां हमारी मस्जिदें हैं और वह पुरानी हैं तथा हमारी भी अधिक है खरखौदा खुदा ने बसाया था वर्षों चला यह झगड़ा अब कुछ बढ़ चला था हिंदू इस झगड़े को अदालत में ले जाना नहीं चाहते थे क्योंकि अंग्रेज सरकार ऐसे बड़े झगड़ों को या तो कोई हल करती ही नहीं थी और करती थी तो मुसलमान के हक में! उसकी नीति को वीज पाठक जानते ही हैं कि" फूट डालो और राज करो "अंग्रेज चाहते थे कि हिंदू मुसलमान दंगे कहीं ना कहीं होते रहे! अब चौधरी पीरू सिंह इस झगड़े में कूद पड़े! उन्हें अंग्रेजी अदालत की अपेक्षा अपने बाहु बल पर अधिक विश्वास था, लोगों को एकत्रित किया! पंचायत में इलाके के हजारों लोग पहुंच गए! इधर मुसलमान ने रोहतक के डिप्टी कमिश्नर को रिपोर्ट देकर बुला लिया! खरखौदा जाटों से भर गया! पंचायत इसलिए बुलाई गई थी कि इस समस्या का हल अब कर ही लिया जाए! जिला कमिश्नर व अन्य उच्च अधिकारियों को अब स्थिति की भयानकता का आभास हो गया था! वहीं अदालत बिठाई गई दोनों पक्षों को अपनी तर्क पेश करने के लिए बुलाया! अंग्रेज मुसलमान को कुछ ज्यादा ही मान देते थे! मुसलमान नेताओं को उन्होंने मु सीधे मुढे और कुर्सियों पर बैठाया परंतु हिंदू नेताओं की अपेक्षा की! इस भेदभाव को चौधरी पीरू सिंह वह जुगलाल भला कैसे सहन करते! लोगों से कहा कि चलो सब अपना फैसला हम खुद करेंगे तभी इनके लिए भी कुर्सियां आ गई और उनके अकाट्य तर्कों के आधार पर हिंदू पक्ष की विजय पाई! इसके बाद मुगलों ने कभी नहीं कहा कि खरखौदा हमारा है!" खरखौदा में नगर जुलूस और रामलीला को लेकर भी विवाद थे।

1947 का वर्ष भारतीय इतिहास में एक महत्वपूर्ण वर्ष है इस वर्ष में लंबे संघर्ष के बाद जो आजादी का फल प्राप्त हुआ उसमें हिंसात्मक घटनाओं एवं विस्थापित बेघर जनता के बेहताशा दुखों ने कड़वा कर दिया था 1947 में भारत के विभाजन के वक्त जो हिंसा हुई उसमें अंग्रेजों की एक सोची समझी योजना प्रतीत होती है इसकी पुष्टि 1931 के पंजाबी जनगणना रिपोर्ट करती है पंजाब की जनगणना रिपोर्ट पार्ट 1 वॉल्यूम 17, 1931 के पृष्ठ 79 पर 53 पॉइंट में लिखा गया है कि "ऐसे देश में जहां निराधार अफवाहें विद्रोह का कारण बनती बन सकती हैं या एक छोटी सी घटना को इतना विकृत कर दिया जाता है कि वह भयंकर दंगे भड़का दे यह स्वाभाविक ही है की जनगणना जैसी प्रक्रिया आलोचना और संदेह का विषय बने जबकि अतीत में जनगणना कराने के लिए सरकार पर तरह-तरह के आरोप लगाए जाते थे अब जनता इसके उद्देश्यों को लेकर असमंजस नहीं है और इसके दूरगामी परिणामों को समझती है फिर भी सभी भ्रांतियां पूरी तरह से अनुपस्थित नहीं थी उदाहरण के लिए पर्चियों के लिए एक विशिष्ट रंग चुनने के बारे में एक हानि रहित निर्देश जिस पर अमूर्तता में थोड़ी मेहनत बचाने के लिए कुछ संप्रदायों की प्रविष्टियां लिखी जानी थी प्रांत के सबसे बुद्धिमान समुदायों के सदस्यों के बीच एक सांप्रदायिक विभाजन को बनाए रखने के प्रयास में बदल दिया गया इन परिस्थितियों में यह आश्चर्य की बात नहीं है कि जहां

कुछ लोगों ने गणना में चूक की शिकायत की वहीं कुछ ने फर्जी प्रविष्टियों के माध्यम से अपने समुदायों के अलावा अन्य समुदायों की संख्या में वृद्धि का दावा किया!"

अंग्रेजों का हमारे देश के बारे में यह सोचना कि यहां अफवाहें विद्रोह का कारण बनती हैं और एक छोटी सी घटना भयंकर दंगे भड़का सकती है यह 1947 में बंटवारे के दौरान सच साबित हुई! देश आम जनता ने सांप्रदायिकता के आधार पर कतले आम किया! देश के तत्कालीन नेताओं में दूरदर्शिता का अभाव नजर आता है! बाद में दोनों देशों ने विस्थापितों को बसाना जैसी समस्याओं से जूझना पड़ा सरकारी सहायता का अभाव विस्थापितों को सालता रहा! वे अपने जन्मभूमि और जन - धन की हानि को भुला ना सके! खरखौदा क्षेत्र के विस्थापित परिवारों की अगली पीढ़ियां भी अपने खानदान द्वारा झेली गई त्रासदियों का वर्णन नम आंखों से करते हैं! उनके किस्से इतिहास में लिपिबद्ध हो कर आने वाली पीढ़ियों के लिए एक नसीहत बन जाएंगे जो सिखाएंगे की नफरत की आग न केवल इंसानियत को जलाती है बल्कि देश के चौमुखी विकास में बाधक है! अवसर का लाभ उठा कर कई प्रकार का फायदा उठाने वाले लोगों को आने वाली पीढ़ियां नफरत की दृष्टि से ही देखते हैं! बुरे वक्त में इंसानियत की मदद करने वाले एवं लोगों की जान बचाने वालों की संताने सिर उठाकर अपने पूर्वजों पर गर्व करती है! खरखौदा में जन्मे 1947 के बाद पाकिस्तान में बसे सैयद कासिम का किस्सा अपनी जन्मभूमि से प्यार करना सीखाता है, जो 80 वर्ष पार करने के बाद भी विभिन्न विरोधों के बावजूद अपनी जन्मभूमि खरखौदा के दर्शन के लिए आना उनका स्वयं को रोहतकी कहकर पुकारना यह दर्शाता है कि जमीन पर बनी रेखाओं को इंसानी जज्बा और दिल नहीं मानता पाकिस्तान में बसे हरियाणा के विस्थापित मुसलमान का आज भी हरियाणवी में बोलना और हरियाणा में पाकिस्तान से विस्थापित लोगों का उनकी क्षेत्रीय भाषा में बोलना आज भी उनकी जड़ों की गहनता को दर्शाता है।

संदर्भ सूची

- हरियाणा का रियासती इतिहास यशपाल गुलिया, पृष्ठ 83, प्रकाशक: हरियाणा ग्रंथ अकादमी, पंचकूला प्रकाशन वर्ष: 2012 (संदर्भित संस्करण)
- सोनीपत डिस्ट्रिक्ट गजट ईयर 1990 प्रकाशक हरियाणा अकादमी पंचकूला पृष्ठ 39
- रोहतक जिला गजट ईयर 1883 – 84
- दैनिक ट्रिब्यून खरखौदा पेज अप्रैल, 2008
- सेंसस ऑफ़ इंडिया 1931 वॉल्यूम 17 पंजाब पार्ट 1 रिपोर्ट पृष्ठ 79
- वार का सिविलाइजेशन द लॉन्ग रिवॉल्यूशन इंडिया ए डी 1857, वॉल्यूम 2, अमरीश मिश्रा पब्लिकेशन रूपा कंपनी अंसारी रोड दरयागंज न्यू दिल्ली 2008 अध्याय 24
- महाविद्यालय गुरुकुल मटिडू सोनीपत पत्रिका स्मारिका, पृष्ठ 58 प्रथम संस्करण जून 1995 मुद्रक तिलक प्रिंटिंग प्रेस 2040 बाजार सीताराम दिल्ली 11006



- साक्षात्कार मास्टर सुमेर सिंह रिटायर्ड अध्यापक गांव छिनोली आयु 100
- साक्षात्कार मास्टर जोरावर सिंह रिटायर्ड अध्यापक विषय इतिहास
- साक्षात्कार श्री दलपत सिंह पुत्र श्री गोपीचंद कस्बा खरखौदा दिनांक 4 अक्तुबर, 2025
- साक्षात्कार श्री राजू सिंह कस्बा खरखौदा दिनांक 4 अक्तुबर, 2025
- साक्षात्कार श्री सरदार सिंह आयु 86 गांव पीपली दिनांक 3 मार्च, 2023
- साक्षात्कार श्री रघुबीर सपुत्र रामगोपाल आयु 85 गांव पीपली दिनांक 3 मार्च, 2023
- साक्षात्कार श्रीमती रतनी देवी पाकिस्तान से विस्थापित ग्राम हसनगढ़ मायका, पता डबल स्टोरी, आयु 86

Youtube Links :

- Kharkhoda Haryana in 1947 | Partition of India | Unforgetful 1947 | Sonipat | Rohtak | Haryana
<https://youtu.be/rnImSbtIswE>
- #Partition_of_India #Haryana #Sonipat #Rohat se #Sakkur #Sindh ai Rasheedan Bibi ki Baten. <https://youtu.be/8XvCjwSRvrU?si=CxfRj84eIYb6-Seo>
- #Partition_of_India #Haryana #Sonipat #Bhatgaon se #Ghotki #Sarhad #Sindh ae #Malik Ni zam u din <https://youtu.be/0xB7uHG1Eul?si=DZi1XEA00miFR16M>
- Begah, Ganaur & Kharkhoda in 1947 | Partition of India | Untold stories of 1947 Haryana India <https://youtu.be/IE7V0boDvLg>
- Kharkhoda Haryana in 1947 | Partition of India | Unforgetful 1947 | Sonipat | Rohtak | Haryana <https://youtu.be/rnImSbtIswE>
- #Partition_of_India #Haryana #Sonipat #NAHRA se #Chak 183WB #Mailsi #Vehari ae Karamdin #Malik <https://youtu.be/aeHOKNHw6Fs?si=YVeTH43MPy3ttMoH>
- #Partition_of_India #Haryana #Rohtak #Rohna se #Okara Pakistan ae Akbar Ali ki Baten <https://youtu.be/3mQn4G30IQw?si=IZQE72aoq3BgCjvH>